भारतीय ज्ञान प्रणाली

देवेन्द्र कुमार

सहायक प्राध्यापक
वी.एम.आई.टी. मेरठ

सार

भारतीय उपमहाद्वीप पर हजारों सालों में जो जानकारी, विश्वास और रीति–रिवाज बने हैं, वे जटिल और विविधतापूर्ण भारतीय सूचना प्रणाली का निर्माण करते हैं। यह कई सभ्यताओं और संस्कृतियों के योगदान के परिणामस्वरूप विकसित हुआ है और इसकी जड़ें प्राचीन वैदिक, उपनिषद और पौराणिक लेखन में हैं। दार्शनिक, धार्मिक, वैज्ञानिक, गणितीय, चिकित्सा, ज्योतिष और साहित्यिक विषय सभी इस ज्ञान प्रणाली में शामिल हैं। इसका आधार एक समग्र दृष्टिकोण है जो मानव अस्तित्व के अन्य पहलुओं के अलावा मन, शरीर और आत्मा को भी शामिल करता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली का सभी जीवित चीजों और ब्रह्मांड की परस्पर निर्भरता और कनेक्टिविटी पर जोर इसकी मुख्य विशेषताओं में से एक है। श्वसुधैव कुटुम्बकमश, या यह विचार कि पूरी दुनिया एक परिवार है, इसे दर्शाता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली में आत्म–साक्षात्कार और आंतरिक विकास को भी बहुत महत्व दिया जाता है। यह योग, ध्यान और ज्ञान और बुद्धि की खोज जैसी गतिविधियों में संलग्न होकर पूरा किया जाता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली आज भी भारतीय सभ्यता का एक अनिवार्य घटक है और आधुनिकीकरण के दौर में भी व्यक्तियों और समुदायों दोनों के लिए प्रेरणा और दिशा का स्रोत है। संतुलन, सद्भाव और करुणा पर इसके विचारों ने भारतीय संस्कृति को प्रभावित किया है और आज भी प्रासंगिक हैं। अपनी दार्शनिक अंतर्दृष्टि, वैज्ञानिक प्रगति और आध्यात्मिक प्रथाओं के माध्यम से, भारतीय ज्ञान प्रणाली ने मानवता के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिससे यह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मूल्यवान और कालातीत विरासत बन गई है।

कीवर्ड भारतीय ज्ञान प्रणाली, आईकेएस, उपनिषद, वेद, आयुर्वेद, योग, वैदिक ज्योतिष, संस्कृत साहित्य, प्राचीन भारत में गणित, भारतीय दर्शन, गुरु–शिष्य परंपरा, योग और ध्यान, वास्तुकला और नगर नियोजन, भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य, प्राचीन ज्ञान, अतुल्य भारत, वैदिक ज्ञान, योग क्रांति, पारंपरिक चिकित्सा, टिकाऊ जीवन, कला और संस्कृति, परंपरा से नवाचार, विविधता में एकता, भारत का गौरव।

भारतीय ज्ञान प्रणाली का परिचय

भारतीय ज्ञान प्रणाली मान्यताओं, प्रथाओं और दर्शन का एक प्राचीन और समृद्ध संग्रह है जो भारत में पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ा है। इसमें विज्ञान, अध्यात्म, कला, साहित्य और सामाजिक मानदंडों जैसे विभिन्न क्षेत्र शामिल हैं और इसने भारतीय समाज और संस्कृति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय ज्ञान प्रणाली की नींव वेदों के प्राचीन ग्रंथों में निहित है, जिन्हें दुनिया के सबसे पुराने शास्त्र माना जाता है। वेदों में चिकित्सा, खगोल विज्ञान, गणित और राजनीति से लेकर अध्यात्म और दर्शन तक के विषयों पर बहुत सारा ज्ञान है। वे भारतीय जीवन शैली के बारे में जानकारी देते हैं, समाज में संतुलन, सद्भाव और एकता के महत्व पर प्रकाश डालते हैं।

(मुंडे, 2023) के अनुसार भारतीय ज्ञान प्रणाली का एक प्रमुख पहलू जीवन के प्रति इसका समग्र दृष्टिकोण है। यह अस्तित्व के सभी पहलुओं – व्यक्ति से लेकर समाज तक, मनुष्य से लेकर प्रकृति तक और भौतिक से लेकर आध्यात्मिक तक – के परस्पर संबंध को स्वीकार करता है। यह समग्र दृष्टिकोण आयुर्वेद, योग और वास्तु शास्त्र जैसी विभिन्न भारतीय प्रथाओं में परिलक्षित होता है, जो पर्यावरण के भीतर और उसके साथ संतुलन और सद्भाव बनाए रखने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू अवलोकन और व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने पर जोर देना है। यह दृष्टिकोण प्राचीन भारतीय ऋषियों और दार्शनिकों की शिक्षाओं में परिलक्षित होता है, जिन्होंने ज्ञान और समझ हासिल करने के साधन के रूप में आलोचनात्मक सोच और आत्म–प्रतिबिंब को प्रोत्साहित किया। यह मौखिक परंपरा के मूल्य पर भी प्रकाश डालता है, जिसमें ज्ञान को कहानी कहने, चर्चाओं और बहस के माध्यम से पारित किया जाता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली ने भारतीय समाज और संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया है, इसके मूल्यों, रीति–रिवाजों और परंपराओं को आकार दिया है। इसने समुदाय की गहरी भावना को बढ़ावा दिया है, जिसमें व्यक्ति एक बड़े सामाजिक ताने–बाने का हिस्सा होते हैं। इसके परिणामस्वरूप पारिवारिक बंधन, बड़ों के प्रति सम्मान और समाज के प्रति कर्तव्य की भावना पर जोर दिया गया है यह एक सद्गुणी जीवन जीने, स्वयं, समाज और ब्रह्मांड के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करने के महत्व पर जोर देता है। इसके कारण भारत में हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सिख धर्म जैसे विभिन्न धर्मों और आध्यात्मिक प्रथाओं का विकास हुआ है, जिन्होंने देश के सांस्कृतिक और सामाजिक ताने–बाने को आकार दिया है (सेनापति, 2018)।

इस प्रकार, भारतीय ज्ञान प्रणाली विश्वासों, परंपराओं और प्रथाओं का एक विशाल और जटिल जाल है, जो भारतीय समाज और संस्कृति के ताने–बाने में बुना गया है। इसने भारतीय जीवन शैली को आकार देने, सद्भाव और संतुलन को बढ़ावा देने और आध्यात्मिकता और समुदाय की गहरी भावना पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसका प्रभाव आज भी आधुनिक भारत में दिखाई देता है, जो इसे देश की पहचान और विरासत का एक महत्वपूर्ण पहलू बनाता है।

ऐतिहासिक अवलोकन

भारतीय ज्ञान प्रणाली, जिसे भारतीय विचारधारा या हिंदू दर्शन के रूप में भी जाना जाता है, ज्ञान, विश्वासों और प्रथाओं के विशाल समूह को संदर्भित करती है, जिन्हें भारतीय उपमहाद्वीप में प्राचीन काल से विकसित और पारित किया गया है। यह ज्ञान प्रणाली प्राचीन वैदिक शास्त्रों में गहराई से निहित है और हजारों वर्षों में विकसित हुई है, जिसने भारत के सांस्कृतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक परिदृश्य को आकार दिया है (कपिल कपूर, 2020)।

भारतीय ज्ञान प्रणाली की उत्पत्ति का पता प्राचीन वैदिक काल से लगाया जा सकता है, जो लगभग 1500 ईसा पूर्व से शुरू हुआ था। हिंदू धर्म के सबसे पुराने धर्मग्रंथ वेदों की रचना इसी समय की गई थी और इन्हें भारतीय ज्ञान और दर्शन का आधार माना जाता है। वेद भजनों, अनुष्ठानों और मंत्रों का एक संग्रह है जो सदियों तक मौखिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी लिखे जाने से पहले प्रसारित किए गए थे। उनमें अनुष्ठानों, बलिदानों, ब्रह्मांड विज्ञान, नैतिकता और आध्यात्मिकता के बारे में व्यापक ज्ञान शामिल है (मार्क, 2020)।

प्रारंभिक वैदिक काल के बाद उपनिषदों का उदय हुआ, जो दार्शनिक ग्रंथ हैं जो वेदों के गहरे अर्थ और महत्व को स्पष्ट करते हैं। उपनिषदों ने आत्म–साक्षात्कार की अवधारणा, या किसी के वास्तविक स्वरूप

की प्राप्ति को दिव्य और ब्रह्मांड के साथ जोड़कर पेश किया। उन्होंने कर्म की अवधारणा की नींव भी रखी, जो कारण और प्रभाव का नियम है जो जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र को नियंत्रित करता है (ओलिवेल, 2024)। लगभग 500 ईसा पूर्व, उपनिषदों की अवधि ने भारत में कई विचारधाराओं के उद्भव का मार्ग प्रशस्त किया, जिनमें से प्रत्येक की अपनी व्याख्याएँ और दार्शनिक प्रणालियाँ थीं। इनमें वेदांत, सांख्य, योग और जैन धर्म शामिल हैं। इन विचारधाराओं ने मूल वैदिक शिक्षाओं में नए विकास और व्याख्याएँ लाईं, जिससे भारतीय ज्ञान और दर्शन में विविधता आई।

सबसे प्रभावशाली विचारधाराओं में से एक वेदांत था, जो उत्तर–वैदिक काल में उभरा और आत्म–साक्षात्कार और परम वास्तविकता की अवधारणाओं पर केंद्रित था। इसने ब्रह्मांड की अद्वैत प्रकृति और एक सार्वभौमिक चेतना के अस्तित्व में विश्वास पर जोर दिया। एक अन्य महत्वपूर्ण विचारधारा, बौद्ध धर्म, 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व में उभरा और पूरे एशिया में फैल गया, जिसने भारतीय ज्ञान और दर्शन को बहुत प्रभावित किया।

बौद्ध धर्म और जैन धर्म के उदय के साथ, प्राचीन भारत में प्रचलित जाति व्यवस्था कमजोर पड़ने लगी। इन नए धर्मों ने पारंपरिक ब्राह्मणवादी व्यवस्था को चुनौती दी और महत्वपूर्ण सामाजिक और धार्मिक सुधार लाए। परिणामस्वरूप, जाति व्यवस्था धीरे–धीरे एक वर्ग व्यवस्था में बदल गई, जिससे निचली जातियों के लोगों के लिए शिक्षा और ज्ञान तक पहुँच के अवसर खुल गए (बर्मन, 2023)। (बिस्वास, 2016) के अनुसार मध्यकाल में, इस्लामी आक्रमणों के बढ़ने और यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों के आगमन के साथ, भारतीय ज्ञान को चुनौतियों का सामना करना पड़ा और इसमें महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। इस्लामी शासक अपनी परंपराएँ और प्रथाएँ लेकर आए और यूरोपीय उपनिवेशवादियों ने पश्चिमी शिक्षा और विचारों को पेश किया, जिससे भारतीय और पश्चिमी दर्शन का मिश्रण हुआ। इन परिवर्तनों के साथ भी, भारतीय ज्ञान प्रणाली का विकास और अनुकूलन जारी रहा। 15वीं और 16वीं शताब्दी के भक्ति आंदोलन ने ईश्वर के प्रति भक्ति और प्रेम पर जोर दिया, जबकि 15वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सिख धर्म के उदय ने हिंदू धर्म और इस्लाम के तत्वों को संश्लेषित किया। 1947 में देश को ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता मिलने के साथ ही भारतीय ज्ञान और दर्शन को पुनर्जीवित करने और बढ़ावा देने के लिए नए सिरे से प्रयास किए गए। स्वतंत्र भारत के संस्थापकों ने देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के महत्व को पहचाना। परिणामस्वरूप, भारतीय ज्ञान की रक्षा और उसे बढ़ावा देने के लिए कई संस्थान स्थापित किए गए, और प्राचीन शास्त्रों और दर्शन को शिक्षा और समाज में प्रमुख स्थान दिया गया (मोनिका बोटा–मोइसिन, 2021)। 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद, पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को पुनर्जीवित करने और उन्हें मजबूत करने के प्रयास किए गए। विभिन्न विषयों में अनुसंधान और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (प्प्ज), भारतीय प्रबंधन संस्थान (प्प्ड) और भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (प्ब्ै) जैसे संस्थानों की स्थापना की गई (कतपीजपपें.बवउ, 2022)।

प्रमुख सिद्धांत और अवधारणाएँ

भारत की सांस्कृतिक विरासत हजारों साल पुरानी है। प्राचीन ग्रंथों और परंपराओं में निहित इसकी ज्ञान प्रणाली ने देश की आध्यात्मिक, सामाजिक और दार्शनिक मान्यताओं और प्रथाओं को आकार दिया है। इस ज्ञान प्रणाली के मूल में तीन प्रमुख अवधारणाएँ हैं – धर्म, कर्म और मोक्ष – जो भारतीय दर्शन और जीवन शैली का आधार बनती हैं।

धर्म, जिसे अक्सर कर्तव्य या धार्मिकता के रूप में अनुवादित किया जाता है, वह नैतिक और नैतिक संहिता है जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था और सद्भाव के अनुसार किसी व्यक्ति के कार्यों का मार्गदर्शन करती है। इसे भारतीय ज्ञान प्रणाली की नींव माना जाता है, और यह इस विश्वास में निहित है कि प्रत्येक जीवित प्राणी की ब्रह्मांड में एक विशिष्ट भूमिका और उद्देश्य है। धर्म अक्सर समाज, परिवार और स्वयं के प्रति व्यक्ति के कर्तव्यों से जुड़ा होता है, और यह एक जिम्मेदार और सदाचारी जीवन जीने के महत्व पर जोर देता है। दूसरी ओर, कर्म कारण और प्रभाव का सार्वभौमिक नियम है। यह इस सिद्धांत पर आधारित है कि हर कार्य, चाहे वह अच्छा हो या बुरा, के परिणाम होते हैं जो अनिवार्य रूप से किसी व्यक्ति के वर्तमान और भविष्य के जीवन को प्रभावित करेंगे। कर्म की यह अवधारणा भारतीय विचार प्रक्रिया में गहराई से समाहित है और इसे पुनर्जन्म के चक्र में एक महत्वपूर्ण कारक माना जाता है। इस मान्यता के अनुसार, वर्तमान जीवन में किसी के कार्यों की गुणवत्ता अगले जन्म में उसके पुनर्जन्म की प्रकृति को निर्धारित करेगी (सोंधी, 2023)। वेद और उपनिषदरू भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और प्राचीन ज्ञान के लिए जाना जाता है। इस ज्ञान प्रणाली के मूल में वेद और उपनिषद हैं – हिंदू धर्म के सबसे प्रतिष्ठित ग्रंथ। हजारों साल पहले रचे गए ये ग्रंथ आधुनिक समय में महत्वपूर्ण प्रासंगिकता रखते हैं, जो भारतीय दर्शन और आध्यात्मिकता के लिए आधार के रूप में काम करते हैं (रामनाथन श्रीनिवासन, 2023)। ेमसेजिनकलीपेजवतल.बवउ, 2020) के अनुसार वेदों को दुनिया के सबसे पुराने धर्मग्रंथ माना जाता है और माना जाता है कि ये प्राचीन भारत के ऋषियों और द्रष्टाओं को ईश्वरीय रूप से प्रकट हुए थे। संस्कृत में रचित, वे भजनों, अनुष्ठानों और मंत्रों का एक संग्रह हैं जिन्हें मौखिक परंपरा द्वारा पीढ़ियों से सुनाया और पारित किया गया था। वेद शब्द का अर्थ ही ष्ज्ञानष या ष्बुद्धिष है, और ग्रंथों को ब्रह्मांड के आध्यात्मिक मार्गदर्शन और समझ का स्रोत माना जाता है। वेदों में चार प्रमुख पुस्तकें शामिल हैं – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। प्रत्येक वेद को चार भागों में विभाजित किया गया है – संहिता (भजन), ब्राह्मण (अनुष्ठान), आरण्यक (ध्यान), और उपनिषद (दार्शनिक चर्चा)। उपनिषद, जिन्हें वेदांत के रूप में भी जाना जाता है, वेदों का अंतिम भाग माना जाता है और ये हिंदू दर्शन का आधार हैं। उपनिषदों में वास्तविकता की प्रकृति, जीवन के उद्देश्य और व्यक्तिगत आत्मा (आत्मान) और सार्वभौमिक चेतना (ब्रह्म) के बीच संबंधों पर गहन चर्चाएँ हैं। यह पुनर्जन्म की अवधारणा, कारण और प्रभाव (कर्म) के नियम और जन्म और मृत्यु (मोक्ष) के चक्र से अंतिम मुक्ति के मार्ग की खोज करता है। ये अवधारणाएँ, यद्यपि प्राचीन भारतीय मान्यताओं में निहित हैं, लेकिन समय से परे हैं और आधुनिक समय के आध्यात्मिक साधकों और दार्शनिकों पर गहरा प्रभाव डालती हैं। गुरु–शिष्य परंपरारू गुरु–शिष्य परंपरा, जिसे गुरु–परंपरा के रूप में भी जाना जाता है, सदियों से भारतीय ज्ञान प्रणाली का एक अभिन्न अंग रही है। यह एक शिक्षक (गुरु) और एक शिष्य (शिष्य) के बीच के रिश्ते और प्रत्यक्ष व्यक्तिगत मार्गदर्शन के माध्यम से उनके ज्ञान के हस्तांतरण को संदर्भित करता है। इस परंपरा ने भारत में ज्ञान, मूल्यों और संस्कृति के प्रसारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और आधुनिक युग में भी इसका बहुत महत्व है (मान्या, 2023)। गुरु–शिष्य परंपरा की उत्पत्ति प्राचीन भारत में देखी जा सकती है, जहाँ यह वैदिक शिक्षा प्रणाली का एक अनिवार्य पहलू था। गुरु से सीखने की अवधारणा केवल औपचारिक शिक्षा तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि कला, संगीत और अध्यात्म जैसे क्षेत्रों में भी प्रचलित थी। ऐसा माना जाता था कि गुरु का ज्ञान और बुद्धि केवल गुरु और शिष्य के बीच एक व्यक्तिगत और समर्पित रिश्ते के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है। दोनों के बीच यह घनिष्ठ संबंध आपसी सम्मान, विश्वास और भक्ति पर आधारित था, और इसने आजीवन जुड़ाव की नींव रखी।

आयुर्वेद और पारंपरिक चिकित्सा आयुर्वेद, चिकित्सा की पारंपरिक प्रणाली, सदियों से भारतीय ज्ञान प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही है। प्राचीन वेदों में आयुर्वेदिक प्रथाओं और प्राकृतिक उपचारों के लाभों का उल्लेख है। आयुर्वेद के साथ–साथ भारत में योग, सिद्ध और यूनानी जैसी अन्य पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियाँ भी हैं, जो पीढ़ियों से चली आ रही हैं और समय की कसौटी पर खरी उतरी हैं। ये प्रथाएँ न केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए बल्कि व्यक्ति के समग्र विकास के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। इस लेख में, हम भारतीय ज्ञान प्रणाली में आयुर्वेद और अन्य पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के महत्व और आज भी उनका उपयोग कैसे किया जाता है, इसका पता लगाएँगे (सुजाता, 2020)। सबसे पहले, आयुर्वेद, जिसका अर्थ है जीवन का ज्ञान, भारत में 5000 साल पहले उत्पन्न हुआ था। इसे दुनिया की सबसे पुरानी चिकित्सा प्रणाली माना जाता है और इसे विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा चिकित्सा की पारंपरिक प्रणाली के रूप में मान्यता दी गई है। आयुर्वेद की नींव इस विश्वास पर आधारित है कि मन, शरीर और आत्मा आपस में जुड़े हुए हैं, और इनमें से किसी में भी असंतुलन बीमारियों का कारण बन सकता है। यह हर्बल दवाओं, आहार परिवर्तनों और जीवनशैली में संशोधन के माध्यम से इन तत्वों के बीच संतुलन बनाए रखने पर ध्यान केंद्रित करता है। आयुर्वेद रोगों की रोकथाम पर भी जोर देता है और समग्र कल्याण प्राप्त करने के लिए एक स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देता है (बंसमपकवेबवचम.पद, 2024)। अन्य क्षेत्रों पर प्रभावरू भारत का एक समृद्ध और विविध इतिहास है, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक इसकी विशाल ज्ञान प्रणाली है। भारतीय ज्ञान प्रणाली, जिसे इंडिक ज्ञान प्रणाली के रूप में भी जाना जाता है, का गणित, खगोल विज्ञान और दर्शन सहित विभिन्न क्षेत्रों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। इस प्रणाली ने आधुनिक शोध को लगातार प्रेरित किया है और दुनिया भर के विद्वानों और वैज्ञानिकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है (सिंह, 2022)। (रॉबी जिदनी, 2020) के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों पर इसके प्रत्यक्ष प्रभाव के अलावा, भारतीय ज्ञान प्रणाली ने हमारे सोचने और सीखने के तरीके को आकार देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है सीखने की कई प्राचीन भारतीय विधियाँ, जैसे कि याद करना, वाचन करना और वाद–विवाद करना, आज भी आधुनिक शिक्षा में शामिल हैं, जो भारतीय ज्ञान प्रणाली के स्थायी प्रभाव को दर्शाता है।

निष्कष

भारतीय ज्ञान प्रणाली प्राचीन ज्ञान और प्रथाओं का एक अविश्वसनीय रूप से समृद्ध और विविध संग्रह है जो समय की कसौटी पर खरा उतरा है। यह एक ऐसी प्रणाली है जो स्वयं, प्रकृति और ब्रह्मांड की समग्र समझ पर जोर देती है और जीवन के सभी पहलुओं में सामंजस्य और संतुलन बनाने का प्रयास करती है।

प्रारंभिक वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक, भारतीय ज्ञान विकसित हुआ है और बदलते समय के साथ अनुकूलित हुआ है, लेकिन इसके मूल सिद्धांत भारत की संस्कृति और समाज में गहराई से समाए हुए हैं। इसकी शिक्षाओं ने न केवल भारत के विकास को बल्कि अन्य सभ्यताओं द्वारा इसके प्रसार और अपनाने के माध्यम से पूरे विश्व को प्रभावित किया है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली का सबसे उल्लेखनीय पहलू इसकी समावेशिता और सार्वभौमिकता है। यह किसी विशिष्ट धर्म, विश्वास प्रणाली या सामाजिक वर्ग तक सीमित नहीं है। इसके बजाय, यह सभी के लिए खुला है, जिससे यह सभी क्षेत्रों के लोगों के लिए सुलभ और प्रासंगिक बन गया है।

इसके अलावा, भारतीय ज्ञान प्रणाली सिर्फ सैद्धांतिक ही नहीं बल्कि गहन व्यावहारिक भी है। यह न केवल ज्ञान और समझ प्रदान करती है बल्कि व्यक्तिगत विकास और तरक्की के लिए व्यावहारिक उपकरण और तकनीक भी प्रदान करती है। योग, ध्यान और आयुर्वेद जैसे अभ्यासों के माध्यम से, यह शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण प्राप्त करने के तरीके प्रदान करती है। इसके अलावा, भारतीय ज्ञान प्रणाली प्रकृति के प्रति श्रद्धा और सभी जीवों के परस्पर संबंध की गहरी समझ में गहराई से निहित है। यह संधारणीय जीवन पद्धतियों, सचेत उपभोग और पर्यावरण के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध को बढ़ावा देती है। अपने अपार योगदान और प्रासंगिकता के बावजूद, भारतीय ज्ञान प्रणाली को हाल के दिनों में चुनौतियों और आलोचनाओं का सामना करना पड़ा है। हालाँकि, भारत और विश्व स्तर पर इस प्राचीन ज्ञान में रुचि का पुनरुत्थान हुआ है, क्योंकि लोग आज की दुनिया में इसकी शिक्षाओं के मूल्य और प्रयोज्यता को पहचानते हैं। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान प्रणाली ज्ञान का खजाना है जो अनगिनत व्यक्तियों को प्रेरित और मार्गदर्शन करना जारी रखती है। जैसे–जैसे हम एक अधिक परस्पर जुड़ी और तेज गति वाली दुनिया की ओर बढ़ रहे हैं, इस प्राचीन प्रणाली के सिद्धांत और अभ्यास एक अधिक सचेत और संतुलित जीवन जीने के तरीके के लिए मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में काम कर सकते हैं। आइए हम इस समृद्ध विरासत को अपनाते और मनाते रहें तथा इसका उपयोग अपने और आने वाली पीढ़ियों के लिए बेहतर और अधिक प्रबुद्ध भविष्य बनाने के लिए करें।

References:

1. Abida Parveena, M. A. (2022). The traditional system of Unani medicine, its origin, evolution and Indianisation:A critical appraisal . Indian Journal of Traditional Knowledge, 511-521.
2. Anish, S. (2023, June 21). Yoga: How the great Bhartiya Knowledge System unites physical self with metaphysical beyond. Retrieved from saadho.org: https://saadho.org/timeless-wisdom/articles/yoga-how-the-great-bhartiya-knowledge-system-unites-physical-self-with-metaphysical-beyond
3. Audichya, D. N. (2023). Cultural Kaleidoscope: Unveiling the Richness of Indian Culture in Indian Literature. International Journal of Research Publication and Reviews, 1248-1252.
4. Barbara Csala, C. M. (2021). The Relationship Between Yoga and Spirituality: A Systematic Review of Empirical Research. Frontiers in Psychology.
5. Barman, R. K. (2023). From Stigmatization to Neo-Buddhist Identity: Reflections on the Changing Identities of the Scheduled Castes of India. Sage Journals .
6. Bhardwaj, T. (2021, DEcember 6). Reviving India’s knowledge systems for modern Indian education and society. Retrieved from www.financialexpress.com: https://www.financialexpress.com/jobs-career/education-reviving-indias-knowledge-systems-for-modern-indian-education-and-society-2376952/
7. Biswas, A. K. (2016). Development Of Education In India During The Medieval Period: A Historical Approach. International Journal of Research and Analytical Reviews, 260-266.